B - IV
L - 40
MIH

द्वितीय विश्वयुद्ध एवं भारतीय राष्ट्रवाद

1939 - 1945

ब्रिटेन	जर्मनी
फ्रांस	इटली
USA - Dec. 1941	जापान
USSR - जून 1941	

द्वितीय विश्व युद्ध के सन्दर्भ में कांग्रेस का प्रारम्भिक दृष्टिकोण

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- एक तरफ कांग्रेस में कुछ ऐसे नेता थे जो युद्ध में अंग्रेजों को समर्थन देने की बात कह रहे थे जैसे- राजगोपालाचारी।
- दूसरी तरफ सुभाष चन्द्र बोस एवं अन्य समाजवादी नेता युद्ध को अवसर के रूप में देख रहे थे और अंग्रेजो को किसी भी प्रकार का सहयोग देने एवं बातचीत का विरोध कर रहे थे।
- तीसरी तरफ नेहरू एवं गांधी जी जैसे नेता थे जो युद्ध में अंग्रेजों के पक्ष को उचित मानते थे लेकिन नेहरू जी का दृष्टिकोण था कि जब तक भारत को स्वतंत्रता की गारंटी नहीं मिलती तब तक अंग्रेजों को समर्थन देने का कोई अर्थ नहीं है।

• अंततः कांग्रेस ने निम्नलिखित शर्तों के साथ सरकार को सहयोग देने की बात कही-

(i) भारत में राष्ट्रीय सरकार का गठन किया जाए जिसका संचालन भारत के राजनीतिक दलों के द्वारा किया जाए

(ii) युद्ध समाप्त होते ही भारत में संविधान सभा का गठन किया जाए।

1940 - कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन

अध्यक्ष - मौलाना आजाद (1940 - 45)

• कार्यकर्ताओं को आन्दोलन के लिए तैयार रहने को कहा गया।

• सुभाषचन्द्र बोस ने इसी समय एक समझौता विरोधी सम्मेलन बुलाया

• 23 मार्च 1940 को मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन

अध्यक्ष - जिन्ना

पाकिस्तान प्रस्ताव पारित हुआ

• 1940 में ही ब्रिटेन में चर्चिल को प्रधानमंत्री बनाया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अगस्त प्रस्ताव / लिनलिथगो प्रस्ताव (1940)

- भविष्य में भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा दिया जाएगा।
- वायसराय परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ायी जायेगी
- युद्ध सलाहकारी परिषद का गठन किया जायेगा इसमें भारतीय भी होंगे।
- युद्ध समाप्त होते ही संविधान सभा का गठन
- अल्पसंख्यकों को यह आश्वासन की उनकी सहमति के बिना सरकार राजनीतिक सुधारों को लागू नहीं करेगी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

नोट :-

इसे साम्प्रदायिक वीटो भी कहा जाता है

- कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनो ने इस प्रस्ताव को अस्वीकृत किया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह (Oct, 1940 - 1941)

क्या :

गांधी जी के निर्देशन में संचालित सत्याग्रह, इसके अन्तर्गत कांग्रेस के नेताओं के द्वारा निर्धारित स्थलों पर सरकार को पूर्व सूचना देकर युद्ध विरोधी भाषण देना था और दिल्ली के लिए प्रस्थान करना था इसे दिल्ली चलो आन्दोलन

भी कहा जाता है।

नोट :-
प्रथम सत्याग्रही थे - विनोबा भावे - पवनार (महाराष्ट्र)

अन्य - नेहरू जी, ब्रह्मदत्त आदि।

क्यों :-

- व्यक्तिगत सत्याग्रह के माध्यम से सरकार एवं अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को यह संदेश देना कि कांग्रेस अंग्रेजों के साथ नही हैं।
- जनता को भी यह संदेश देना कि कांग्रेस सरकार के साथ नही है। और आन्दोलन के लिए तैयार है।
- एक अन्य उद्देश्य था युद्ध संबंधी प्रयासों में बाधा उत्पन्न न हो।
- कांग्रेस संगठन एवं नेताओं को सक्रिय रखना।

क्रिप्स मिशन (मार्च 1942)

- युद्ध की प्रतिकूल परिस्थितियों, अंतर्राष्ट्रीय दबाव, जैसे (अमेरिका का दबाव) तथा कांग्रेस को बातचीत मे उलझाये रखने के उद्देश्य से क्रिप्स मिशन को भारत भेजा गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रस्ताव :-

- युद्ध समाप्त होते ही भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा दिया जाएगा।
- युद्ध समाप्त होते ही भारत में संविधान सभा का गठन किया जाएगा जिसमें ब्रिटिश भारत एवं देशी रियासतों के प्रतिनिधि होंगे।
- ब्रिटिश भारत से सदस्यों का निर्वाचन होगा तथा देशी रियासतों से सदस्यों को मनोनीत किया जाएगा।
- रक्षा की जिम्मेदारी अंग्रेजों पर होगी
- जो प्रांत एवं रियासतें संविधान सभा से अलग रहना चाहे वे अलग रह सकते हैं।

नोट :- कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकृत किया

- गांधी जी ने इसे उत्तर दिनांकित चेक कहा था और नेहरू जी ने दिवालिया बैंक के द्वारा जारी किया गया चेक कहा गया।

KGS IAS
INDIAN GLOBAL STUDIES
Most trusted learning platform
KHAN SIR

भारत छोड़ो आन्दोलन (8 अगस्त 1942)

बाम्बे से प्रारंभ (अगस्त क्रान्ति)

क्यों :-

- संघर्ष-तैयारी-संघर्ष का अगला चरण।
- युद्ध के कारण महगांई मे वृद्धि एवं आम लोगों की कठिनाइयाँ बढ़ी।
- युद्ध के दौरान परिस्थितियाँ ब्रिटेन के अनुकूल थी और समाजवादी, क्रान्तिकारी इसे अवसर के रूप में देख रहे थे
- एशिया में जापान की सफलता से भी क्रान्तिकारी उत्साहित थे।
- कांग्रेस एवं ब्रिटिश सरकार के बीच सत्ता हस्तांतरण के मुद्दे पर गतिरोध बढ़ता गया।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह के कारण कांग्रेस संगठन एवं नेतृत्व किसी भी संभावित आन्दोलन को लेकर तैयार था।
- जुलाई 1942 में गांधी जी ने वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के समक्ष आन्दोलन का प्रस्ताव रखा इस पर सहमति बनी लेकिन अन्तिम निर्णय 8 अगस्त 1942 को आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक पर छोड़ दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• इसी बैठक में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया।

नोट :- गांधी जी ने करो या मरो का नारा दिया सरकारी कर्मचारियों को कांग्रेस के प्रति निष्ठा व्यक्त करने को कहा। देशी रियासतों की जनता से भी आन्दोलन में भाग लेने का आग्रह किया गया आन्दोलनकारियों के साथ उदार व्यवहार के लिए सेना एवं प्रशासन से अपील की गई

नोट : नेहरू जी ने भारत छोड़ो का प्रस्ताव पेश किया था।

• 9 अगस्त की सुबह तक अधिकांश बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। (ऑपरेशन जीरो आवर) और गांधी जी को पूना के आगाखाँ पैलेस में रखा गया।

विशेषताएँ :- आन्दोलन का अन्तिम लक्ष्य था पूर्ण स्वराज लेकिन इसे प्रारम्भ करने का तात्कालिक उद्देश्य था अंग्रेजो पर स्वतंत्रता की गारंटी के लिए दबाव बनाना।

• अन्य जन आन्दोलन की तरह कांग्रेस इसे संगठित एवं अहिंसक रखना चाहती थी लेकिन सरकार की कठोर नीतियों के कारण इसमें स्वतःस्फूर्तता तत्व अधिक दिखा एवं

KGS GLOBAL STUDIES IAS KHAN SIR

देखते-ही देखते आन्दोलन उग्र हो गया।

- उग्रता की अभिव्यक्ति कई रूपों में देखी गई जैसे : भूमिगत क्रान्तिकारी गतिविधियाँ समानान्तर सरकार, सरकारी कार्यालयों को नुकसान इत्यादि।
- आन्दोलन के दौरान २०० से अधिक पुलिस स्टेशन, ३०० से अधिक रेलवे स्टेशन और ९०० से अधिक डाकघरों को नुकसान पहुँचाया गया।
- जयप्रकाश नारायण एवं अन्य समाजवादियों के नेतृत्व में भूमिगत क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन बड़े पैमाने पर किया गया।

इसके अन्तर्गत बड़ी संख्या में क्रान्तिकारियों को इस बात के लिए प्रशिक्षित किया गया कि किस प्रकार परिवहन एवं संचार के साधन तथा सरकारी कार्यालय को नुकसान पहुँचाना है।

KGS IAS GLOBAL STUDIES KHAN SIR

Note :- इसमें रामानंद मिश्र, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, राम मनोहर लोहिया, बीजू पटनायक, ए पटवर्धन इत्यादि।

- देश के कई हिस्सों में समानान्तर सरकार का गठन किया गया।

जैसे - मिदनापुर, कटक, सतारा, बलिया इत्यादि।

- ऊषा मेहता ने गुप्त तरीके से रेडियो का संचालन किया था।

Note :-

बलिया – चित्तू पांडेय
कटक – लक्ष्मण नायक
सतारा – नाना पाटिल / चौहान
मिदनापुर – सतीश सामंत
(मतांगिनी हजारा)

- सरकार ने आन्दोलन के दमन के लिए उग्र तरीके अपनाये।
जैसे हवाई जहाज से आन्दोलनकारियों पर बम एवं गोलियाँ चलायी गए।
- आन्दोलन का प्रसार अखिल भारतीय स्तर पर, आन्दोलन का प्रारंभ शहरों से हुआ लेकिन शीघ्र ही आन्दोलन का केन्द्र ग्रामीण भारत बना।
- आन्दोलन मे छात्रों महिलाओं एवं किसानों की व्यापक भागीदारी थी और आन्दोलन को नेतृत्व समाजवादी पृष्ठभूमि के नेताओं ने प्रदान किया।

नोट :- मजदूरों एवं मुसलमानों की भागीदारी अपेक्षाकृत कम थी क्योंकि मार्क्सवादी पार्टी और मुस्लिम लीग सरकार के साथ थी

- मार्क्सवादी एवं मुस्लिम लीग सरकार को समर्थन तो दे रही थी लेकिन कार्यकर्ताओं की संवेदना आन्दोलन के प्रति थी और आन्दोलन के दौरान

KCS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Trusted Learning Platform

साम्प्रदायिक दंगे नही हुए।

- आन्दोलन मे जनजातीय समाज, छोटे जमींदार इत्यादि की भागीदारी रही। रियासतों की जनता ने व्यापक तौर पर भाग लिया।

- कई क्षेत्रो में प्रशासन व पुलिस की संवेदना आन्दोलनकारियों के साथ दिखी।

- सरकार की कठोर नीति और उग्र आन्दोलन की सीमायें इत्यादि कारणों से यह आन्दोलन कमजोर अवश्य हुआ लेकिन इसने भारतीय राष्ट्रवाद एवं आजादी को लेकर आम लोगों के उग्र चेतना को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया इस आन्दोलन के साथ यह मनोविज्ञान भी निर्मित हुआ कि भारत को शीघ्र आजादी मिलेगी।

* किसान / आम जनता - रात मे रेलवे ट्रैक को उखाड़ना।

KGS IAS